जंगल की आग एक गंभीर चिंता
कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2022), खण्ड 02 भाग 05, पृष्ठ संख्या 38–40

जंगल की आग एक गंभीर चिंता

रेशव चहल और सत्यप्रकाश गुप्ता
शोध छात्र,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं
प्रौद्योगिकी विश्विद्यालय, अयोध्या, उ.प्र. भारत।

भारत में वनों का सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व है. इनकी छत्रछाया में ही भारतीय सभ्यता और संस्कृति का विकास हुआ. आज भी वनों का महत्व किसी से छिपा नहीं है. सही शब्दों में कहें, तो पृथ्वी पर जीवन जीने के लिए जंगलों का होना बेहद जरूरी है. इन्हीं की वजह से धरती पर बारिश और शुद्ध हवा मिलती है. सबसे जरूरी बात कि जंगल कई जानवर और पक्षियों का घर होता है, लेकिन आज जंगलों की हालत देखकर मन बिचलित होने लगता है. आज मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि वह लगातार पेडों की कटाई कर रहा है, जिसकी वजह से जंगलों उजाड़ते जा रहें है. वनभूमि कम होने का यह मुख्य कारण है. इसी वजह से जंगल सिमटते जा रहें हैं और शहर बढ़ते जा रहें है।

जंगल की आग का वर्गीकरण:

सतही आग:

वनाग्नि अथवा दावानल की शुरुआत सतही आग के रूप में होती है जिसमें वन भूमि पर पड़ी सूखी पत्तियाँ, छोटी–छोटी झाड़ियाँ और लकड़ियाँ जल जाती हैं तथा धीरे–धीरे इनकी लपटें फैलने लगती हैं।

भूमिगत आग:

- कम तीव्रता की आग जो भूमि की सतह के नीचे मौजूद कार्बनिक पदार्थों और वन भूमि की सतह पर मौजूद अपशिष्टों का उपयोग करती है, को भूमिगत आग के रूप में उप–वर्गीकृत किया जाता है। अधिकांश घने जंगलों में खनिज मृदा के ऊपर कार्बनिक पदार्थों का एक मोटा आवरण पाया जाता है।
- इस प्रकार की आग आमतौर पर पूरी तरह से भूमिगत रूप में फैलती है और यह सतह से कुछ मीटर नीचे तक जलती है।
- यह आग बहुत धीमी गति से फैलती है और अधिकांश मामलों में इस तरह की आग का पता लगाना तथा उस पर काबू पाना बहुत मुश्किल हो जाता है।
- इस प्रकार की आग महीनों तक जलती रह सकती है और यह मृदा के वानस्पतिक आवरण को नष्ट कर सकती है।

मैदानी आग:

- यह उप–सतह जैसे कि वन क्षेत्रों के नीचे मौजूद डफ की परतें, आर्कटिक टुंड्रा या

टैगा और दलदल की जैविक मृदा में मौजूद कार्बनिक ईंधन में लगने वाली आग है।

- मिट्टी में अपघटित कार्बनिक पदार्थ को कूड़े का ढेर (स्पजजमत) कहते हैं। यह धीरे–धीरे सड़ता है और जब आंशिक रूप से विघटित होता है,तो इसे डफ कहा जाता है।
- यह आग सतह पर या उसके नीचे जड़ और अन्य सामग्री को जला देती है, यानी अपक्षय के विभिन्न चरणों में कार्बनिक पदार्थों की परत के साथ वन भूमि पर विकसित घास को भी जला देती है।

जंगल की आग के कारण

- बिजली चमकना,
- ज्वालामुखीय उदगार,
- गिरती चट्टानों की रगड़ से उत्पन्न होने वाली चिंगारियाँ,
- कोयले की परत में आग लगना,
- अकस्मात् आग का लगना तथा
- मानवीय कारण जैसे सिगरेट–बीड़ी के टुर्रा तथा पावर लाइन इत्यादि से।

जंगल की आग का प्रभाव

आग वन क्षरण का एक प्रमुख कारण है और इसके व्यापक प्रतिकूल पारिस्थितिक, आर्थिक और सामाजिक प्रभाव हैं, जिनमें शामिल हैं:

- मूल्यवान लकड़ी के संसाधनों का नुकसान।
- जलग्रहण क्षेत्रों का ह्रास।
- जैव विविधता का नुकसान और पौधों और जानवरों का विलुप्त होना।
- वन्यजीवों के आवास का नुकसान और वन्यजीवों की कमी।
- प्राकृतिक पुनर्जनन की हानि और वन आवरण में कमी।
- ग्लोबल वार्मिंग।
- कार्बन सिंक संसाधन की हानि और वातावरण में सीओ2 के प्रतिशत में वृद्धि।
- अस्वास्थ्यकर रहने की स्थिति के साथ क्षेत्र के माइक्रॉक्लाइमेट में परिवर्तन।
- मिट्टी का कटाव मिट्टी की उत्पादकता और उत्पादन को प्रभावित करता है।
- ओजोन परत रिक्तीकरण।
- स्वास्थ्य समस्याएं बीमारियों की ओर ले जाती हैं।
- आदिवासी लोगों और ग्रामीण गरीबों के लिए आजीविका का नुकसान, क्योंकि लगभग 300 मिलियन लोग अपनी आजीविका के लिए वन क्षेत्रों से गैर–लकड़ी वन उत्पादों के संग्रह पर सीधे निर्भर हैं।

वनों को आग से बचाने के उपाय

- जंगल में आग लगने पर एक विशेष टूल का इस्तेमाल किया जाता है, जो तापमान,

हवा की गति जैसे मानकों की जांच करने में मदद करती है।

- जंगल के इलाकों में बीच–बीच में गड्ढे खोद देना चाहिए, ताकि आग ज्यादा न फैल सके।
- जंगल से उन सभी चीजों को हटा देना चाहिए, जो चिनगारी पैदा करती हों।
- आग जलाने के काम को नियन्त्रित किया जाना चाहिए, जिससे जंगल में पेड़ से गिरी चीड़ के पेड़ की पत्तियाँ इकट्ठी न होने पाएँ।
- जंगल में ज्वलनशील पत्तियों का फैलाव नहीं होना चाहिए, साथ ही चीड़ की सुई जैसी पत्तियों के वैकल्पिक प्रयोग को सरकार द्वारा बढ़ावा दिया जाए।
- वन विभाग के पास वायरलैस के जरिए संचार करने का बेहतर साधन होना चाहिए। जिससे जंगल में लगी आग पर जल्दी काबू पाया जा सके।
- वन विभाग के पास एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए तेज वाहन की व्यवस्था होनी चाहिए।
- जंगल के आस–पास रहने वाले लोगों को लकड़ी लेने का अधिकार बनाए रखा जाए।
- वनों की देख–भाल और उनके संरक्षण के लिए वन विभाग को पर्याप्त धन उपलब्ध कराया जाए।

जंगल की आग पर हालिया डेटा:

- भारतीय वन सर्वेक्षण के अनुसार, 30 मार्च, 2022 तक भारत में वनाग्नि की कुल 381 घटनाओं की सूचना मिली है। वनाग्नि की सर्वाधिक (133) घटनाएँ मध्य प्रदेश में दर्ज की गई हैं।
- मार्च 2022 में वनाग्नि की अधिकांश घटनाएँ उत्तराखंड, मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों में दर्ज की गई थीं।
- राजस्थान के सरिस्का टाइगर रिजर्व में हाल ही में लगी आग को भी बेमौसम माना गया था, यहाँ उच्च तापमान के कारण वनाग्नि का प्रसार देखा गया।
- जनवरी 2021 में उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश (कुल्लू–घाटी) और नगालैंड – मणिपुर सीमा (जुकू घाटी) में लंबे समय तक आग लगी।

सरकार द्वारा उठाए गए कदम

- 2004 में भारतीय वन सर्वेक्षण ने वनाग्नि की रियल टाइम निगरानी हेतु फॉरेस्ट फायर अलर्ट सिस्टम विकसित किया।
- जनवरी 2019 में इस सिस्टम का उन्नत संस्करण लॉन्च किया गया जो अब नासा और इसरो से एकत्रित उपग्रह आधारित जानकारी का उपयोग करता है।
- वनाग्नि पर राष्ट्रीय कार्ययोजना 2018 और वनाग्नि रोकथाम एवं प्रबंधन योजना।